This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6157**

Unique Paper Code : **2052103603**

Name of the Paper : **Kathetar Gadya Sahitya**

Type of the Paper : **DSC**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए। 15

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य एवं कथा साहित्य के अंतःसंबंध को स्पष्ट कीजिए।

2. कथेतर साहित्य की प्रमुख विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 15

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर को स्पष्ट करते हुए रेखाचित्र विधा की विशेषताएँ लिखिए।

3. 'आवारा मसीहा' जीवनी के आधार पर शरतचन्द्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'दद्दा' संस्मरण के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए।

P.T.O.

4. निराला के पत्र साहित्य की विषय-वस्तु और प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'डायरी' विधा के आधार पर रमेशचंद्र शाह की रचना 'अकेला मेला' की समीक्षा कीजिए।

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×8=16

(क) राजसिक गर्व-भरी मुद्रा से माइक को मेज़ पर ठेल कर नीचे गिराते और सबको सकते में डालते हुए उन्होंने बोलना आरंभ किया तो उनके पहले ही शब्दों से सारी सभा में एक सनसनी-सी दौड़ गई। एक सन्नाटा और उसके बाद डेढ़ लाख जनता तक प्रयासरहित सहजता से पहुँचने वाले पहले ही शब्द – 'मेरी आवाज़' – 'मेरी आवाज़' भारत की लाख-लाख जनता तक किसी यंत्र के सहारे के बिना ही पहुँचेगी। माइक को उठा फेंकने की सफाई अंग्रेजी में देकर उन्होंने सभा को एक बार फिर अचरज में डालते हुए हिन्दुस्तानी में बोलना आरंभ किया।

अथवा

माखनलाल जी की कविता से पहला परिचय कारावास में हुआ। और भी अनेक पाठकों का पहला परिचय उसी कविता से हुआ होगा जिससे मेरा, पर उस परिस्थिति में नहीं। दिल्ली षड्यंत्र केस के एक अभियुक्त के रूप में दिल्ली जेल में लंबे दिन काटते हुए मैंने एक कापी में हिंदी की कविताएँ उतार कर रखना आरंभ किया था : कविता पढ़ने में रुचि थी और किताबें एक साथ दो-तीन से अधिक रख नहीं सकता था इसलिए पसंद की कविताएँ कापी में नकल करके पुस्तकें लौटा कर नई पुस्तकें मंगाता रहता था...तभी एक दिन चमत्कृत-सा होकर एक भारतीय आत्मा की छोटी-सी कविता पढ़ी।

(ख) मंदिर का विशाल प्रांगण खचाखच भरा था। उस विशाल जल-समुद्र में उठती हिलोरों ने मुझे छा लिया : पाँवों का जंगल था वह-पाँवों का समुद्र-कोमल फूल सरीखे पाँव...जर्जर

बिवाइयों से भरे पाँव, नंगे काले खुरदरे पाँव, गोरे, गहनों से अलंकृत पाँव....। कमजोर और लड़खड़ाते पाँव, फुरतीले थिरकते पाँव.....। पाँवों का मेला था वह, मुझ पर से गुजरता हुआ। और मैं ? मैं कहाँ था ? उस जंगल, उस समुद्र में ?.....।

अथवा

इस नाच की उत्पत्ति दरभंगा जिले में हुई, ऐसा अनुमान किया जाता है। पता नहीं, अपनी जन्मभूमि में इसकी क्या अवस्था है, किंतु उत्तरी बिहार के कुछ जिलों तथा भागलपुर, पूर्णिया आदि के गांवों में आज भी इसकी 'कद्र' है। यह निम्न स्तर के लोगों की ही चीज रह गई है। तथाकथित भद्र समाज के लोग इस नाच को देखने में अपनी हेठी समझते हैं, लेकिन मुसहर, धांगड़, दुसाध के यहाँ – विवाह, मुंडन तथा अन्य अवसरों पर इसकी धूम मची रहती है। जब से मैं अपने को भद्र और शिक्षित समझने लगा, तब से इस नाच से दूर रहने की चेष्टा करने लगा, किंतु थोड़े दिनों के बाद ही मुझे अपनी गलती मालूम हुई और मैं इसके पीछे 'फिदा' रहने लगा।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 2×7=14

(1) जीवनी विधा : उद्भव और विकास

(2) पत्र-साहित्य की विशेषताएँ

(3) 'अकेला मेला' डायरी की **दो** प्रमुख घटनाएँ

(4) 'अज्ञेय' की दृष्टि में 'उपन्यास सम्राट'।